२२. हमारी आवश्यकताएँ कौन पूरी करता है ?

बताओ तो

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो ।

१. तुम्हारे पिता जी क्या काम करते हैं ?

२. तुम्हारे दादा जी क्या काम करते थे ?

३. बड़े होकर तुम्हें क्या बनना पसंद होगा ?

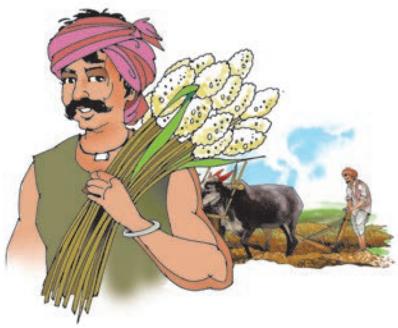

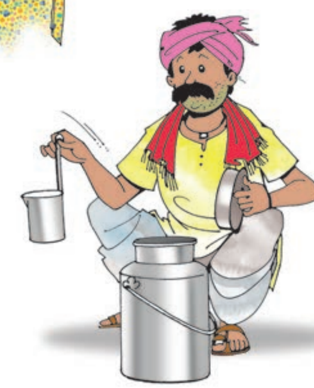

बच्चो, ऊपर दिए गए चित्रों को ध्यान से देखो और प्रश्नों के उत्तर दो :

(१) इनमें से कुछ लोगों को तो तुमने अवश्य देखा होगा । उनके नाम बताओ ।

(२) इनमें से किन लोगों से तुम्हारा संबंध आ चुका है ?

(३) इन लोगों द्‌वारा तुम्हारी किन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है ?

हवा, पानी, भोजन तथा निवास ये सभी सजीवों की आवश्यकताएँ हैं । ये मनुष्य की भी आवश्यकताएँ हैं । इनके अतिरिक्त भी मनुष्य की बहुत-सी आवश्यकताएँ होती हैं । जैसे, तुम्हें कपड़ों की आवश्यकता होती है, अध्ययन के लिए शिक्षक की, घर में किसी के बीमार होने पर उपचार हेतु डॉक्टर की आवश्यकता होती है । हमारी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न लोग हमारी सहायता करते हैं । उनके द्‌वारा किए गए कार्य के कारण हमारी तथा अन्य लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं । उनके द्‌वारा किए जाने वाले इन कार्यों को ‘व्यवसाय’ कहते हैं ।

• व्यवसाय के प्रकार

व्यवसाय के कई प्रकार हैं । उनके प्रमुख चार भाग किए जा सकते हैं :

१. प्रकृति पर आधारित व्यवसाय (उदा. खेती करना, मछली पकड़ना इत्यादि)
२. उद्‌योग (उदा. मोटरकार तैयार करना, घड़े तैयार करना, कपड़े तैयार करना इत्यादि)
३. व्यापार (उदा. दुकानदारी, कृषि बाजार इत्यादि)
४. सेवा पूर्ति (उदा. बैंक, शिक्षक, डॉक्टर इत्यादि)

• खेती का महत्त्व

हमारे देश में खेती एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है । किसान खेतों में काम करते हैं । फलस्वरूप देश के सभी लोगों को अन्न मिलता है ।

* भात, दाल, पतली दाल, सब्जी, रायता, रोटी, भाकरी (कोंचा) इत्यादि हमारे दैनिक आहार के मुख्य घटक हैं ।
* खेतों में बोई गई फसलों द्‌वारा हमें ये खाद्‌य पदार्थ प्राप्त होते हैं ।
* खेतों में ज्वार, बाजरा, गेहूँ, धान, दलहन और उसी प्रकार पत्तीदार सब्जियाँ तथा फलवाली सब्जियाँ उपजाई जाती हैं ।
* इनके अतिरिक्त खेती के व्यवसाय से हमारी अन्य कई आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है। उदा. गन्ने से शक्कर मिलती है । कपास की रूई का हम कपड़े बनाने के लिए उपयोग करते हैं ।
* फल, फूल और औषधीय वनस्पतियों की भी खेती बहुत अधिक पैमाने पर की जाती है।

• खेती के पूरक व्यवसाय

खेती द्‌वारा प्राप्त उपजों का उपयोग करके हम अन्य व्यवसाय कर सकते हैं । खेतों में ही चारा तैयार होता है । उसका उपयोग गायों, भैंसों, बकरियों के लिए होता है । चारे के सहारे हम खेती में उपयोगी जानवरों को पाल सकते हैं। इन जानवरों से हमें दूध, मांस, चमड़ा इत्यादि मिलता है । खेतों में अनाज उत्पन्न होता है । इसी अनाज का उपयोग करके मुर्गी पालन किया जाता है । खेती में उपजे फलों से शरबत, जेली, जैम इत्यादि खाद्‌यपेय तथा पदार्थ तैयार किए जाते हैं । भेड़ पालन, मुर्गी पालन, पशु पालन, फल-प्रसंस्करण इत्यादि व्यवसाय खेती पर ही निर्भर होते हैं । इनको ही खेती के **पूरक व्यवसाय** कहते हैं ।

गाँवों के कुछ व्यवसाय तो परंपरागत (पारंपारिक) होते हैं । दादा जी तथा पिता जी जो काम करते चले आ रहे हैं, समय आने पर वही काम प्राय: उनकी संतानें भी करने लगती हैं परंतु अपने देश में हम अपनी पसंद का व्यवसाय स्वयं चुन सकते हैं ।

क्या तुम जानते हो

प्राचीन काल में मनुष्य खेती करना जानता ही नहीं था । भोजन प्राप्त करने के लिए वह निरंतर भटकता रहता था । वह शिकार करता था। फल तथा कंदमूल खाता था । जब मनुष्य खेती करने से अवगत हुआ तब उसे एक ही स्थान पर भोजन प्राप्त होने लगा । अब भोजन के लिए उसका भटकना बंद हो गया । उसे खाली समय मिलने लगा । इसके कारण विभिन्न आविष्कार हुए और विभिन्न प्रकार के उद्‌योग स्थापित किए गए।

● उद्‌योग

उद्‌योगों के लिए कच्चा माल खरीदा जाता है । उसपर प्रक्रिया की जाती है । उससे नवीन तथा पक्का माल तैयार होता है । कुम्हारों द्‌वारा घड़े तैयार करना, एक प्रकार का उद्‌योग ही है ।

घड़े तैयार करने में उसे क्या करना पड़ता है, यह तुमने कभी देखा है ? नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखो ।

कुम्हार पहले अच्छी मिट्‌टी प्राप्त करता है ।

अच्छे घड़े बनें, इसके लिए कुम्हार मिट्‌टी में कुछ अन्य पदार्थ भी मिलाता है ।

उसमें पानी मिलाकर उसकी लोई (गाढ़ी लुगदी) करता है । इसे मिट्‌टी को गूँधना कहते हैं ।

गूँधी हुई मिट्‌टी चाक पर घुमाकर उससे घड़े तथा अन्य आकार तैयार करता है । इन्हें धूप में सुखाता है ।

कच्चे घड़े आँवे में पकाकर पक्के बनाए जाते हैं ।

तैयार घड़ा ।

घड़े बनाने के उद्‌योग में कच्चा माल है–मिट्‌टी । पक्का माल है–घड़ा । मिट्‌टी जैसे कच्चे माल से घड़े जैसा पक्का माल तैयार करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, उसे प्रक्रिया कहते हैं । इस प्रक्रिया का अर्थ उद्‌योग ही है ।

जिस प्रकार कुम्हार मिट्‌टी से घड़े बनाता है, उसी प्रकार लकड़ी, बाँस, फूल इत्यादि का उपयोग करके कुछ वस्तुएँ तैयार की जाती हैं । जो वस्तुएँ सीमित मात्रा (परिमाण) में घर पर ही तैयार की जाती हैं; उन्हें हस्त उद्‌योग अथवा कुटीर उद्‌योग कहते हैं ।

कुछ कारखाने बहुत बड़े होते हैं । वहाँ पर बहुत-से लोग यंत्रों की सहायता से काम करते हैं। तुम्हारी स्कूल बस, साइकिलें, कापियाँ-पुस्तकें, कागज जैसी वस्तुएँ कारखानों में बनाई जाती हैं । तुम्हारे जिले में भी ऐसे उद्‌योग होंगे । अगले पृष्ठ पर दिए गए जिले के मानचित्र पर आधारित कृति पूर्ण करो ।

मानचित्र से मित्रता

१. औषधि कारखाने के स्थान के नाम के चारों ओर चौखट बनाओ ।

२. अपने जिले में कई उद्योग हैं । सूची के चिह्नों के आगे उद्योगों के नाम लिखो; जो तुम्हें मालूम हैं ।

३. सूची के चिह्नों का उपयोग करके अपने जिले में विभिन्न उद्योगों को दर्शाओ ।

४. साबुन और सुगंधित तेल कारखाने के स्थान के चारों ओर चौखट बनाओ । मानचित्र का चिह्न रँगो ।

शिक्षकों के लिए

- यह कृति करते समय विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । विशेष रूप से प्रश्न २ और ३ के लिए ।

क्या तुम जानते हो

सारिणी के आधार पर तुम 'कच्चा माल, उद्‌योग तथा पक्का माल' वाली शृंखला को समझो :

कच्चा माल →	उद्‌योग का नाम →	पक्का माल
गन्ना	शक्कर उद्‌योग	शक्कर
रूई	वस्त्र निर्माण	कमीज/जीन्स/फ्रॉक
बाँस	टोकरियाँ बनाना	टोकरियाँ
मैदा	बेकरी उद्‌योग	बिस्कुट/पाव/खारी

थोड़ा सोचो

ऊपरवाले चित्रों में दिखाई गई वस्तुएँ तुमने देखी होगी अथवा उनका उपयोग किया होगा। चित्रों के नीचे दी गई चौखटों में उन वस्तुओं के नाम लिखो :

- चित्र की कौन-सी वस्तुएँ खेतों में उगती हैं ?
- कौन-सी वस्तुएँ घर पर ही तैयार की जा सकती हैं ?
- कौन-सी वस्तुएँ कारखानों में तैयार होती हैं ?

क्या तुम जानते हो

कुछ गाँवों, तहसीलों अथवा जिलों में विशिष्ट प्रकार के व्यवसाय अथवा उद्‌योग बड़े पैमाने पर चलाए जाते हैं । उनमें काम करने वाले कारीगरों और उत्पादनों की विशेषताओं के कारण ये व्यवसाय अथवा उद्‌योग अत्यधिक प्रसिद्‌ध हो जाते हैं । उदा., सोलापुरी चादर, कोल्हापुरी चप्पलें, पैठणी साड़ियाँ इत्यादि जो क्रमश: सोलापुर, कोल्हापुर तथा पैठण में तैयार की जाती हैं। अपने परिसर के ऐसे व्यवसायों अथवा उद्‌योगों का पता लगाओ ।

इसे सदैव ध्यान में रखो

मनुष्य ने बहुत-से व्यवसायों का निर्माण किया है परंतु इन व्यवसायों के लिए आवश्यक संसाधन उसे प्रकृति द्वारा प्राप्त होते हैं । प्रकृति सभी सजीवों की आवश्यकताएँ पूरी करती है । हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए ।

शिक्षकों के लिए

- स्थानीय कारीगरों के साथ विद्यार्थियों को संवाद स्थापित करने में सहायता प्रदान करें ।
- हमारे साथ-साथ सभी सजीवों की आवश्यकताएँ प्रकृति द्वारा पूरी होती हैं । विद्यार्थियों के मन में प्रकृति के लिए आदरभाव का निर्माण हो; इसलिए अपनी ओर से प्रयास करें ।

हमने क्या सीखा

- मनुष्य की आवश्यकताओं के कारण उद्योगों तथा व्यवसायों का निर्माण हुआ ।
- उद्योगों तथा व्यवसायों के प्रकार ।
- खेती के व्यवसाय (कृषि व्यवसाय) का महत्त्व
- उद्योग का अर्थ क्या है ?
- जिले के उद्योगों की जानकारी

स्वाध्याय

(अ) संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) यदि हमारे देश में खेती न की जाए तो उसके क्या परिणाम होंगे ?

(२) तुम्हारे परिसर के विभिन्न व्यक्ति कौन-कौन-से व्यवसाय करते हैं, उनके नाम लिखो ।

(३) उद्योगों के कोई तीन उदाहरण लिखो ।

(आ) नीचे दी गई शृंखला पूर्ण करो :

(१) कपास → --------- → कपड़े

(२) --------- → फल प्रसंस्करण → जैम/जेली

(३) लोहा → मोटरकार उद्योग → -----------

MS4JIH

उपक्रम

- कपड़े की किसी दुकान / मॉल / साप्ताहिक बाजार में जाओ । वहाँ किए जाने वाले व्यापारों तथा व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करो ।

***